



# ये तेरे प्रतिरूप

[कहानी-संग्रह]

‘अज्ञेय’



राजपाल शर्मा सन्ज, दिल्ली

१९६१  
मिचलान् हीरान् वात्स्यायन

नीमरा सम्बरण १९६६

मूल्य	११ रुपय पचास पने
प्रकाशक	गजानन एण्ड सन्स बम्बे २००
सम्पद	गजानन एण्ड सन्स बम्बे २००

---

YE TERE PPATIPOOP  
SHORT STORIES

by Ajneva  
2-40

—खड़ा मिलेगा

वहा सामने तुमकी

अनपेक्षित प्रतिरूप तुम्हारा

नर, जिसको अनभिप आसो में

नारायण की व्यथा भरी है ।



शमशेरजी को



## क्रम

सब भीर दव	६
देवोसिंह	२१
नारगिया	२७
हजामत का सायुन	३४
बन्ना का सुना सुना के बन्द	४०
गरणगता	४७
तटन-बक्स	६१
मुस्लिम मुस्लिम भाई भाई	६६
गमन्ते तत्र दवता	७२
बन्ना	८२
मितीन बाबू	८६
कविता भीर जीवन—एक कहानी	९६
गिगा	१०६
बलाकार का मुक्ति	१०६



## निवेदन

एक मञ्चन का आधा कहानिया पुस्तकालय में  
लाना याद दया है । अन्य कहानिया दूसरे मण्डल में  
दया धुता है किन्तु तिन मण्डल में दया था व वषों में  
मनुष्यत्व है और उक्त पुन मण्डल का विचार भी नहा  
है । तथा परिस्थिति में उनमें मञ्चन कहानियों को नय  
प्रकाशना में मिला नया स्वाभाविक था । जो कहानिया  
महा र । है उनमें एक मञ्चन में आने की मण्डल मण्डल  
का मामल स्पष्ट है और वह आना करता है कि तिन दृष्टि  
में वह कहानिया लक्ष्य का मण्डल व पाठक का भी मनुष्यत्व  
दया ।

—मण्डल

## सेब और देव

प्रोफेसर गजानन पण्डित न अपना चन्मा पाछर फिर छाया पर लगाया और दबत रह गए।

मोटर पर स उत्तरर और सामान डाकबगल म भिजवाकर उहाने सोचा था अभी आराम करने की जरूरत तो है नहा, जरा घूम घूमकर पहाड़ी सीढ़ देव स और इन्तीलिए मोटर पे ब्रह्म के धक्कम धक्क से चला होकर व इस पहाड़ी रास्त पर हा लिए थ। छाया म जब चरमे का बाय टण्डाहा गया और ऊपर उनवे गमबदन स उठी हुई भाप जमने लगी तब उहोने चन्मा उतारकर चमाल स मुह पाछा फिर चन्मा साफ करके छाया पर चढ़ाया और फिर दबत रह गए।

पहाड़ी रास्ता आम एवाएव खुल गया था चीठ के युग समाप्त हो गए थे। आगे रास्त की पार करता हुआ एव भरना बह रहा था। उगवा जितना चन्मा समतल भूमि म था उसपर ता छाया थी लेकिन जहा वह माग के एव और नीचे गिरता था वहा प्रपात व फेन पर मूय की बिरफें भी पड़ रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि चमकदार की बोग्य म से चादी का प्रवाह फूट पड़ा है—या कि प्रकृति-नायिका की बजरारी घास स स्नेह व गद्गद आनुमा की भन्नी और उगव पाएएव चट्टान व सहारे एव पहाड़ी राजपूत बाना गयी थी। उसकी चौकी हुई भाली दाबन स साफ दीप्तता था कि प्रोफेसर साहब का वही धक्कमान् था जाना उग एवन्म अनपिचार प्रयोग मानूम हो रहा है।

प्रोफेसर साहब सिता के एव कामेज म प्राचीन इतिहास और पुनः तत्त्व व अध्ययन है। व उन थोड़-म सागा म हैं जिनका पना और मनो रजन ग्य हा है। मनोरजा के लिए भी व पुरातत्व की छार ही जाते हैं।



कोई उठाएगा नहीं कि न जाने किसकी है और कौन लेने आ जाए ।

रास्ता अब फिर फिर गया था सक्कि पीछे क दीघकाय वृद्धों से  
नहा अब उससे दोनों ओर से सब के छोटे छोटे सचाने गातवात पट्टे डार  
डार पर लदे हुए फला के बारणमानो विनय से मुने हुए—क्याकि जहा सार  
होना है वहा विनय भी अवश्य हाता है दुःखविन ही अविनायी हो सकता  
है—और कभी कभी हवा से भूम-स जाने हुए। कुत्सू के जगत्प्रसिद्ध शयाकी  
प्रणामा प्राकेपर साहब न मुन ही रंगी थी, कई बार मगाकर सेव साए भी  
थ लेकिन आज उस प्रकार पेट पर उग हुए असह्य पत्रोंको दायकर उनकी  
तबीयत पुन हो गई । और इससे भी अधिक शुगी हुई इस बात न कि गय  
और त्याद और रस की उस विपुल रंगि वा न को रक्षक वही रखने में  
आता है । यथायक व लिण बाड तब लगाई गई है । पहाड़ी सम्यता व प्रति  
उनका आदर भाव और भी बल गया—क्या गहर में इस तरह बाग रह  
सकता ? पत्रा के पकने की कभी मोवा हान आता और नहीं तो स्थूल  
बासेजोंके सडक हा टिहु दल कीतरह आवर मयसाफ वर भेने और जितना  
मान गही उतना बिगाड भेने । वहा ता कोई बाग लगाए तो दस एव भोज  
पुरिये लठत पहरेदार गग और फिर भी चारा चार जन की सी दीवार  
सडी वर कि कोई गुन छिपकर न सं नाग सब वहा जावर बन में रह  
सके । और यहा—यहा बाग की सामा बनाने व लिए एव तार का जगला  
तब नहीं है । पछों व नीच जो लम्बी-लम्बी पाग लग रहा है वही रास्ते के  
पाग आवर नव जानी है वही सब बाग की सीमा समझ ना ता समझ  
तो । यहा तो

प्रोफेसर साहब के पास हा घम्म से कुछ गिरा । उठाने पीककर दगा,  
उहें आने दग एक सडका पेट पर न गुना है और उगका अर्पणित आद में  
लिपन की वाणिग वर रहा है । उसका हाथ में दा सय है जि ह वह अपने  
पेट हुए भूरे कोट में किमी तरह छिपा ना चाहता है ।

उगकी भेंगी हुई आगे और चहुरा साफ बट रहा था कि वह चारा  
वर रहा है ।

यहां कुत्लू पहाड़ की सुरम्य उपत्यकाओं में भी वे यही सोचते हुए घ्राए हैं कि यहां भारत की प्राचीनतम सभ्यता के अवशेष उह मिलेंगे और हिंदू कान की शिल्प कला के नमूने और धातु या प्रस्तर या सुषा की मूर्तिया और न जाने क्या क्या लेकिन इतना मव होत हुए भी सौम्य के प्रति—जीते-जागते स्पन्दयुक्त क्षणभंगुर सौन्दर्य के प्रति—उनकी घ्राएँ भ्रष्ट नहीं हैं। बाला को वहां खड़ी देखकर उसके परो के पास बहते हुए भरने का स्वर सुनत हुए उह पहल तो एह हसिनी का रयाल घ्राया फिर सरस्वती का (यद्यपि बाला के हाथ में बीणा नहा एक छोटी-सी छड़ी थी)। उन्होंने अपने स्वर को यथासम्भव बोलस बनाकर पूछा तुम कहा रहती हो ?

बाला ने उत्तर नहा दिया ससम्भ्रम दृष्टि त उनकी ओर देखकर जल्दी जल्दी पहाड़ पर चढ़न लगी।

फोफेसर साहब मुस्कराकर आग बल दिए। बानिका का मोलापन उहे भ्रष्टा भ्रष्टा सा लगा। सोचन सगे कितने सीधे-सा सरन स्वभाव के होने हैं यहां के लोग। प्रकृति की सुखद गों में खेनते हुए इहें न फिक्र है न खटका है न बीम लागच है। अपने खाते-पीत डार चराते गात नाचते निन बिता दते हैं। सभी तो बाहर से घानेवाने घ्रादमी को देखकर सकोच हाता है। अपने आपमें लीन रहनेवाने इन भले प्राणियों को बाहर बानी से क्या सरोकार ?

घ्रागे बन्ते बन्त प्राफेसर साहब सोचन सगे ऐसे भले लोग न होते, तो प्राचीन सभ्यता के जो अवशेष बचे हैं वे भी क्या रह जाने ? खुश न-न्वास्ता ये लोग यूरोपियन सभ्यता के सीखे हुए होत ता एक दूसरे को नोचकर घा जाने उसकी राख भा न बची रहने दते। लेकिन यहां तो पाहियान के जमाने का ही घ्राण है सबका अपने काम से मतलब है दूसरे के काम में दसल दना दूसरे के मुनाफे की ओर दृष्टि डानना यहां महापाप है। लोग खोर चरने छाड दते हैं शाम का ने घ्राते हैं। कभी चोरी नहीं गिबायत नहीं। सेता खड़ी है कोई पहरेदार नहीं। मजान क्या एक भुट्टा भी चोरी हा जाए। मेरे स्थान में तो भगर मैं एक चवनी यहां राह में फँक दू तो

कोई उठाएगा नहीं कि न जान किसकी है और बोन लेने आ जाए ।

रास्ता घब फिर घिर गया था लकिन चीट व दीपकाय वृष्टी स  
नहा घब उसके दाना और ये सत्र व छोटे छोटे लचाल गानवान पट डार  
डारपर लदे हुए फला ये कारण मानी विनय स मुक्त हुए—क्याकि जहा सार  
होना है वहा विनय भी अवश्य होता है शुद्ध व्यक्ति हो अविनयी हो सकता  
है—और कभी कभी हवा स भूम-स जाने हुए। कुतूह व जग-प्रसिद्ध सेवाकी  
प्रगता प्राकेसर साह्य न सुन हा रती थी कई बार मगाकर सब ताण भी  
व लेकिन आज इस प्रकार पेड पर उभे हुए असम्य पत्रोंका दखकर उनकी  
तबीयत खुन हो गई । और हमसे भी अधिक खुशी हुई हम बात स कि गय  
और स्वाद और रस की उस विपुल रगि का न कोई शक वही हमने म  
घाता है न धकाव व लिए बाड सब नगार्द गई है । पहाड़ी सम्पत्ता के प्रति  
उनका आनंद भाव और भी घन गया—क्या गहर म इस तरह याग रह  
सकता ? फला के पवन की कभी नोयत ही न घाता और नहा तो स्कून  
बालेजों के नदब ही टिट्टा दम बीतरह थावर सयसाफ वर देने और जितना  
माने गही उतना बिगाट दन । वहा तो कोई बाग नगाए सो दस लय भोज  
पुरिये नठत पहरेदार गगे और फिर भी चारा और जल की सी दीवार  
गड़ी कर कि कोई खुन छिपकर न स भाग सब वहा जाकर बन म रह  
सके । और यहां—यहा बाग की सीमा बताने व लिए एक सार था जगता  
सब नहा है । पछों व नीच जो समी-समी पाम लग रहा है वही रास्ते के  
पाग आवर नव जाती है वहा तक बाग की सीमा गुमभ ला ता समभ  
सो । यहा ता

प्राकेसर साह्य के पास ।। घम्म स कुछ गिरा । उठान चौककर देगा,  
उहें मान दम एक सन्का पत्र पर म पूना है और उगवी अपर्याप्त घाद म  
लिपने की मांगि कर रहा है । उसके हाथ म दा गव है जि ह वह घपन  
पत्रे हुए भूरे घोट म किसी तरह छिपा सेवा चाहता है ।

उगवी हँसी हुए घागे और पहगा साफ बह रहा था कि वह घोरी  
कर रहा है ।

कि यह ऊँचा गिखर बिने के लिए बहुत उपयुक्त जगह है और यह भी व जान गए कि यहाँ बना हुआ किता उजड़कर किनी जली निरवरोध हो जाएगा ।

भाडिया भी छोटी हाता चली । धाम की बजाय अब पयरोली जमीन घाँ जिमम किसी तरफ कोई बनी हुई पगडड़ी नहा थी जिघर चले जाओ वही माग । बटो-बही साल पत्थर के भा कुज टुकड़े दीख जाते थे जो गायन किन की इमारत में बही नग हागे नहीं तो उपर साल पत्थर होता नहीं । वही-बहा पत्थर और मिट्टी व स्तूपाकार टीन की आड में कोई गाडे रग के पत्तोवाली भाडी नगी हुई दाख जानी ना वह आसपास के उजाड मूने पन की और भी गहरा कर देती । साम व घुघलक में ऐसी भाडी को दख कर स्तूप में धूम्रवत् निक्कते हुए किनी प्रत की कल्पना होना कोई असंभव बात नहा थी ।

एक ऐस ही स्तूप की आड में प्रोफेसर साहब ने देखा एक गडडे में कीच भरी है जिसकी नमी से पोसे जाते हुए दा वृक्ष खडे हैं और उनके नीचे पत्थर का छोटा-सा मन्दिर है जिसका द्वार बन्द पडा है ।

प्रोफेसर साहब ने कुण्ठे में अटक कर हँस कर निकाली तो द्वार खुलने की बजाय आगे गिर पडा । उसके बगल उगड गए हुए थे । उन्होंने किबाड की उठाकर एक ओर धर लिया ।

थोड़ी देर व पीछे हटकर खडे रह कि बन्द और सीतल के कारण बदबूदार हवा बाहर निकल जाए फिर भीतर भावने सगे ।

मन्दिर की बुरी हालत थी । भीतर में जाने कब के बलि पशुओं के मींग—बकरे के और हिरन के—पडे हुए थे जा सूखकर धूल के रग के हो गए थे । उनपर बीडे भी चल रहे थे । पग व पत्थरो व जोडो से काही उग आई थी । उन सींगा के डर से देवी की जाने पयरोली की मूर्ति एक ओर का मुँह गई थी पाम में पडी हुई गणेश की पातल की मूर्ति जग से बिहृत हो रही थी । केवल दूसरी ओर खडा चैत पत्थर का गिब लिंग अब भी साफ बिबना और सधे हुए गिपाही की तरह दान्त खडा था । आसपास की जजर

अव्यवस्था में समस्त दर्शनों में भाव से ऐसा जान पड़ता था मानो कुछ होकर बह रहा हो मेरी इस निमृत्त अतः गाथा में आकर भरे कुटुम्ब की तात्ति भय करनेवाले तुम वीर ?

दो एव मिनट प्रोफेसर साहब दहरी पर खड़े मंड ही इस दान्य को दसते रहे। फिर उन्होंने बाह पर टगा हुआ अपना ओवरकोट नीचे रखा एव बार-बारों घोर देगवर निजम पावर भी जूत खोल देना ही उचित समझा घोर भीतर आकर दबी का मूर्ति उठाकर दगने लगे।

मूर्ति अत्यन्त सुन्दर थी। पाच सौ वर्ष से कम पुरानी नहीं थी। इस सम्बन्धी अवधि का उसपर जग भी प्रभाव नहीं पड़ा था या पड़ा था तो पावर को घोर बिजगा करके मूर्ति का सुन्दर ही बना गया था। मूर्ति बही बिजती तो तीन-चार हजार से कम की न होती किसी अच्छे पारसी के पास जाती तो दम हजार भी कुछ अवधि मूल्य न होता। घोर यह महा ऐसी उपेक्षित हालत में पड़ी है। न जान क्या स कोई इस मन्दिर तक आया भी नहीं है।

प्रोफेसर साहब ने मूर्ति ठीक स्थान पर लीधी करके रख दी और फिर दहरी पर आकर उसका सौन्दर्य देखने लगे।

पाच सौ वर्ष पाच सौ वर्ष से यह यही पड़ी होया न जाने कितना पूजा करने पाई होगी, कितनी बर्तियों के ताज-गम-भूत रत्न से स्नान करके अपना दबी सौन्दर्य निगारा हुआ और अब कितने बर्तों से इन रंगते हुए बीड़ों की सम्बन्धी-सम्बन्धी जिनासु मूर्तों का लानिजनक गुदगुदाद गह रही होगी उफ दबत्व की कितनी उपेक्षा। मानव नगर है वह मर जाए घोर उसकी अस्मियों पर बीड़ रंग यह मधम में आना है। लेकिन दबता पत्थर पड़ है उसका महत्व कुछ नहीं, सबिन मूर्ति तो दबता की है देवत्व की चिरन्तनता की निशानी तो है। एक भावना है पर भावना आरणीय है—क्या यह मूर्ति मही पड़ रहने के बाबिन है, इन बाटों के निर बिनके पाम अद्वि की दिन नहीं पूजन को हाथ महा देगने की धारों नहीं, इने की लखा तब नहीं ब्रेवस टोशन का हिलती हुई गनी मूर्त



हैं यह मूर्ति वही ठिकान स हानी

न जाने क्या प्रोफेसर साहब ने एकाएक मन्दिर-द्वार से हटकर चारों ओर घूमकर देखा फिर न जाने क्यों घासपास निजन धातु तसल्ली की सास ली और फिर वहाँ आ खड़ा हुआ ।

मूर्ति गणेश की भी बुरी नहीं लेकिन वह उतनी पुरानी नहीं न उतनी सुन्दर नहीं पर निर्मित है । पोतन की मूर्ति में कभी वह आत्मा ही नहीं सकती जो पत्थर में होती है । दया की मूर्ति का देखते-देखते प्रोफेसर साहब के हृदय की स्पन्दन-गति सीढ़ी हान गयी—इतनी सुन्दर जा थी वह । वह फिर आगे बढ़कर उस उठान का हुआ । लेकिन फिर उन्होंने बाहर भावकर देखा । पर वहाँ कोई नहीं था । कोई आत्मा ही नहीं उस विचारे उजड़ हुआ मन्दिर के पास । किस परवाह थी निजन की अपनी दीप्ति स जगमग करती हुई उस दबी की । दबी के प्रति दया और सहानुभूति से गन्गद होकर प्रोफेसर साहब फिर भीतर आए । उपकर उन्होंने मूर्ति को उठाया और अपने घनकत हुए हृदय का दान्त करने की कोशिश करते हुए एकटक उस देखते गये ।

निन इतना घनक क्या रहा है ? प्रोफेसर साहब का ऐसा लगा जैसे वे डर रहे हैं । फिर उन्हें उस विचार पर हसी-सी भी आ गई । डर किससे रहा है मैं ? प्रताप ? मैं भी क्या यहाँ के योगी की तरह अधविश्वासी हूँ जा प्रतीति का मानूँगा ? कविता में निहाल स भन ही मुझे यह सोचना अच्छा लग कि यहाँ प्रतीति बसत है और रात को जब अधेरा हो जाता है तब इस बन्द मन्दिर में आकर दबी का घासपास नाचते हैं । दबी है गिव है उनके गुण भी ता हान हो चाहिए । रात को मूर्तियों का घेर धरकर नाचते होंगे और इन न जाने क्या के वनि पशुओं के भस्मीभूत सीमा स प्रतीति प्रसाद पान हाम । और निन में मन्दिर की कन्दराओं में दरारा में छिपकर अपना उपास्य मूर्तियों का रक्षा करते हाम दग्ने होंगे कि कौन आता है क्या करता है

उठाने फिर मूर्ति का रस निवा और नोटकर देखा । उन्हें एकाएक

नगा जस उस अखण्ड नीरखता म काई छाया मा आवार उनवे मोछ से भागवर नहीं छिप गया है—प्रत । व फिर एव खती-भी हसी हमवर बाहर निपल आए। इस घोर निजन ने मर सहर के शार म उलभे स्नायुभा मो और उनमा लिया है—इसा खतीज पर वे पहुच और फिर मन्दिर की ओर देखने लगे।

दिन ठन गहा था। मन्दिर की लम्बी पत्ती हुई छाया का दखवर प्रोफेयर साहब को एमा लगा, माना वह दूर हटती हटना भी मन्दिर स अनग हाना नहीं चाहता उससे बिपटी हुई है, मानो उसको रक्षा करना चाहती हो माना वह मन्दिर और उसकी मूर्तिया उस छाया की गोम क गिनु हा। प्रोफेयर साहब का मन भटकन लगा।

ईनिष्ट क विरामिष्ट भी इतन ही उपक्षित पड थ। यह मन्दिर आवार म बहुत छाटा है व विराम थ सविन उपधा ता वही थी। उसम भी न जान क्या-क्या गजान ऐम ही प थ जस यहा यह मूर्ति उनक बार म भी अगा म क्या क्या माने फला रखी था भूत प्रेतो की अन्त म यूरोप के पुरातत्त्वविद साहस करव बहा गए उन्हाने उनम प्रबल किया और अब गसार क बड-बड संग्रहालयो म के गजान पड हैं और अपन महत्व क अनु रूप सम्मान पात हैं। विनादे-पया क अजायबघर म सूतागाम् की बहु स्वण मूर्ति—उस नी सर मने सोन का ही भूय तीस हजार रुपय हागा— फिर प्राचीनता का मूस्य अनग और उसम नड हुए हार-जवाहरात का अलग कुन मिनावर नालों रुपये की चीज है वह

वे फिर भीतर गए। मूर्ति उठाई और फिर रख दी। रखकर फिर बाहर आ गए। उन्हाने फिर सब धाग दगा। कोई नहीं था। मूय भी एक छोटे-म यान्न क पीछ छिप गया था।

एवाएव उनवी पवराहट का कारण स्पष्ट हा गया। कुछ ठण्ड-भी जानकर उन्हाने जल्दा स आवरकाट पहना और फिर भीतर चन गए।

मूर्ति के उपयुक्त यह स्थान क्वापि नहा है। मन्दिर है पर जहा पूजा हो नहीं होजी यह क्या मन्दिर ? और गाव वान परगाह बच करण है ?

यहा मंदिर भी गिर जाए तो सायद महीना उह पता ही न लगे । कभी किसी भटकी हुई भेद बकरी की खोज में भाया हुआ गहरिया भावर दस ता देखे । यहा मूर्ति को पढा रहने देना भूल ही नही पाप है ।

इस निश्चय पर धाकर भी उहोंने एक बार बाहर धाकर तसल्ली की कि कही कोई देख नही रहा है । सब लौटकर मूर्ति उठाकर जल्दी से कोट के भीतर छिपाइ किवाड़ को यथास्थान खडा किया । बूट एक हाथ में उठाए और बिना लौटकर दखे भागते हुए उतरने लग ।

जब देवी का स्थान और उसके ऊपर खड दोना पेनों की फुनगी तक भाखी की घोट हो गई तब उन्होने रक्कर बूट पहने और फिर धीरे धीरे उतरते हुए ऐसा माग खोजन गे जिससे गाव में से हाकर न जाना पड गिखर के दूसरे मुख से हा वे उतर सकें ।

गाव मान भर पीछे छुट गया । सेवो के बगीचे फिर गुरू हो गए थे । कही-कही कोई मधु पीकर भभाया हुआ मोटा-सा काला भौरा प्रोपेसर साहब के कोट से टकरा जाता था । कभी कोई तितना धाकर रास्ता काट जाती थी । सूय की धूप नाल हो गई थी—य सब अपना अपना ठिकाना खोज रहे थ । प्रोपेसर साहब भी अपने ठिकाने की ओर जा रहे थे—उनका हृदय आह्लाद से भर रहा था । उनका पहना ही दिन कितना सफन हुआ था । कितना सौन्दय उन्हाने देखा था और कितना सौदय बहुमूल्य सौन्दय उन्हाने पाया था । कुलू का अनिवचनीय सौल्य—वास्तव में वह देव ताओ का भजन है

उस समय प्रोपेसर साहब के भीतर जो कुलू प्रम का ही नही मानव प्रम का ससार भर की शुभेच्छा का रस उमड रहा था उसकी बराबरा कुलू के प्रसिद्ध रस भरे सेव भी क्या करते । प्रोपेसर साहब की स्नेह उड नता हुई दृष्टि के नाचे वे सेव मानो पककर रस से और भर जाते थ उनका रग कछ और जान हो जाता था । कितन रस गद्गल हो रहे थ प्रोपेसर साहब ।

सब वं बाग में फिर वही धमाका हुआ। प्रोफेसर साहब ने दस्ता एक लट्ठा उठा दबकर भाग सृष्ट है। उनका मूँटने वं घबराव पना से लदी हुई गाल भी टूटकर आ गिरी है।

प्रोफेसर साहब ने शौच वं स्वर में कहा क्या कर रहा है ?

सबसे न सहमकर उनका छरफ दस्ता—वहाँ लट्ठा था। हाथ का थाहा भा साया हुआ मय वह कोट वं मुनूयद के भीतर छिपा रहा था।

प्रोफेसर साहब वं तन में आग उम गई। लपककर धातक वं कोट का गता उहों पकडा भटका दबकर सब बाहर गिराया दो तमाच उगव मुह पर लगाते हुए कहा बदमाश फिर चारी करता है। धमा में डाटव गया था बेगम को नाम भी नहा आनी।

उहाने लट्ठ का छाती में धक्का दिया। वह लट्ठलट्ठाकर कुछ दूर जा पडा गिरन का हुआ सनस गया फिर एक हाथ से कोट का वही स धाम-कर जहा प्रोफेसर साहब वं धक्का दिया था एक दम भरी धीर मारकर रो उठा।

धीर मुनकर प्रोफेसर साहब का कुछ सार्ति हुई कुछ धानद-मा हुआ। विद्रप स उहने कहा क्या दुखती है छाती ? और छिपाया सब कहा पर।

बात में भर हुए तिरस्कार का धीर दास्ता बनान वं लिए उनसे हाथ ने उनका अनुकरण किया उठकर सजी में प्रोफेसर साहब वं भावरवाट वं बानर में धुगा।

एकएक प्रोफेसर साहब पर माता गाव गिरा। एक शोधिया दनवाला धातोव दाग नर उनका भाग जववर एक बावन लिंग गया इमन ता मय पुराया है तुम देखस्यान मूँ साए।

गहमे हुए सन्निहत-स प्रोफेसर साहब दाग नर सटे रह फिर धारे धीर उसका पाव गांव की घोर बन पडे।

एक उह मुमान लगा कि यह बदबूदा है उनका दसीन बिलमुस गनत है तुमता भाया हान है लकिन य वं जान वस इस सबबुद्धि का प्ररणा वं

प्रति बहरे हा गए थ । जसे-जस भातर का राहन वन लगा उस रात रमन के लिए उनकी गति भी तीव्रतर हानी गई । जब व आधी बी तरह गाव मे रो गुजर रह थ तब घर जाता हुआ प्रत्येक व्यक्ति कुछ विस्मय स उनकी ओर बसता और उह सगता कि व सब उनका छाती की ओर ही दम रहे हैं । जस उस मान आवरकोट की ओर म छिपी हुई देवमूर्ति को और उसके भी पीछे प्रोफेसर साह्य व निल म बसे हुए पाप को व खूब अ छा तरह जानते हैं ।

अधेरा होने हात व मंदिर पर पहुंचे । किवाड एक ओर पटककर उन्हाने मूर्ति को यथास्थान रखा । नीचकर बसन रंग सा आसपास छाए हुए और अब अधेर म भयानक हो गए सुनसान न उह फिर सुभाया कि वे एक निधि को नष्ट कर रहे हैं । लेकिन न जान क्या उनका मन म गान्ति समझ आई । उ ह लगा कि दुनिया बहुत ठीक है बहुत अच्छी है ।

## देवीसिंह

बाबूजी कुछ मगझीन खरींगे ?

मिस्टर अस्थाना ने उमका मवाल नहा मुता। मवाल ता दूर बिभीया जबाब मुनता भा उहें गवारा नही हाता। अपनी ही बात उह बितनी प्रिय है वह मैं अकसर गाथा करता हू। मुमम खोन तुम्हारी दलीयें गय घसी हाती हैं। तुम एक छात्रमी व प्रयाग को खबर ही मुग्ध हा जात हो तुम्हें यह सीखना ही नही कि एक छात्रमी कुछ नही एक छात्रमी का इस्ट्रगिल बोर्ड माने नही रखता अगल बीज वगैरे का मधय ३।

जवान देने का व्ययता जात हुआ भी मैं कुछ कहता पर लडक ने फिर पुवारा बाबूजी, कुछ मगझीन खरींगे ? नर घाई है बद्द एक

घीर मैं दान भर उम रेगता रह गया। बिछा तरह मैं न कहा घरे दधीगिह तुम ॥ घीर एक बार फिर गिर म पर तब उम दग गया। उतान कुछ चाहत अभिमान व भाव न कहा हा बाबूजी मैं निम म स्मृत म पन्ना ह शाम को अगलाय बचना हू।

मिस्टर अस्थाना म मैं न कहा इगका कहानी आप जानते ता आपकी बात का जबाब आपकी खु मित्र जाता।

हू ।

हा वह 'हु' करत बान उहा द मयन हैं। पर मेरा स्मृति म गहता बर्द याने बाटे-नी उमर धा ॥ बाई ना मान पहन का बाने जब मैं न खीमिह का लते पहन देता था घीर फिर उमका नाम जाना था।

पता बाबाय व सम्य बराम म म हाता हुआ मैं चला जा रहा था। जहां-तहा व ता नाग बाबाय-नीतिघ घीर पीत-ज्मम बचनबाद बराम के

स्वभो स नम दठ थे । उनर बीच म स गुजगना वसा हो था जम सागर व  
किनारे सूखना भीपिया के बाच म स होत हुण जाना । एक धोर मागग्-भी  
दुकान जिनस पुभावन आलोक का लहरिया जव-नव घावर वरामने का  
सीच जाती थी और दूसरी ओर जन-सकुन

तभी एक स्वभ के पीछे से एक टेनी मेंटी छाया न उपक्कर हाथ बणाए  
और एक वमन स्वर म कहा बाजूजी एक अघना दोग ?

स्वर सा बेमेन था ही क्योंकि भित्तारिया के स्वर म दीनता होती है  
ऐसा सहज अपनापन नहा और अगना मागनेवाले भित्तारी भी मुझे याद  
नहीं पड़ता मुझे कभी भिन्न हो—या तो पसा भागते हैं या दक्की ।

भित्तारियों को पसा देन या न देन का अथगास्त्र मैं नहीं जानता ।  
मिस्टर प्रस्थाना कभी-कभी समझाने लगते हैं कि यह दया क्या का भावना  
गन्त चीज है और भित्तारिया को बणावा देना क्या सघप को कमजोर बनाना  
है । पर मैं अधिक ध्यान नहीं देता । मैंने मान लिया है कि मानव के प्रति  
आदरता को भी सुला डानना अगर अकलमन्नी है तो कभी अकलमन्नी का दूर  
से मलाम कर देना ही ठीक है । और सीभाग्य स उस समय मिस्टर प्रस्थाना  
साथ थे भी नहीं ।

मैंने उनके को सिर स पर तक देखा या मक्क कटू तो मिर स घड़ तक  
क्याकि उसका घड़ ही वरामने पर टिका था । हाथो म घामी हुई लकड़ी  
की घाहिया के सहारे भुजाओपरवन देतर वह घिमटता हुआ चलता था ।  
टांगें थी ता पर सूखी हुई और निर्जीव । देखते ही पात हो जाना था कि  
गन्ध म विटामिन सी कीकमी और उसके साथ साथ पोन्नियो याशिगु  
कालीन लकवे स उसका घघ शरीर बंकार हो गया होगा । लेकिन शरीर  
की सहज शक्ति पूरकता के कारण उसका घड़ भी सुगठित था और उसके  
कंधे अकल यौवन की पुष्ट मांस पणियो को सूचित कर रहे थे । और उसका  
चेहरे पर एक दृष्टता और आत्मविश्वास की भलक था ।

मैंने उनके से पूछा अघना क्यों ? और अगर दक्की हा तो ?

उसने मानो मुझपर एहसान करते हुए कहा तो आपकी दक्की ही

से लेंगे ।'

मैंन जब म हाथ छासा । बड़ा इक्की भी नहीं दुपन्ना थी । उसीके सहजे क अनुपून मैंन भी मानो घपनी मफाई देत हुए बड़ा धरे मेरे पाम तो सिफ दुमनी है ।

उसन मेरी धोर कुछ सदियभ भाव से दगा—बहा मैं उस बा तो नही रहा हूँ ? फिर तनिब मुस्करावर बीना धसिए दुमनी ही द दीजिए—बाम धा जाएगी ।

दुमनी दकर मैं उमम उसबा नाम पना और इतिहास पूछने लगना ता कोई मजब बात न होती । मैंने प्रबसर लोगों को ऐसा करते देता है । गायद बिरीवी बरुण कहानी मुनवर अपने इक्की-दुमनी के बसिया की दयता बढ़ जाती है । पर मैं चाहता भी तो उसन मोरा नहा दिया । दुमनी नेत ही उमका हाथ नावे पदी घोरी पर टिका दह का भार उसपर साध कर वह मुठा और इस पुर्तों स लभे की घाट हो गया कि मैं भीचक-सा रह गया । साध ही मोट स उसक कट का स्वर मैंने सुना मज हो गया वे ! धवे ले धा वे—यहा ले धा ।

मेरा कौतूहन उचित धाया नहा मा मैं क्या जानू पर मैं लभे की मोट रहकर भाग की घाना पर बान लगाए रहा ।

उमीके समवग और एक सदन की धावाज धाई क्या हो गया वे, देवीगिह ?

यम देगा र—धमी पता सग जाएगा ।

और एक तीसरा स्वर निबट जाता हुआ धवे माने तू यता दे ।

दग वे गाली-बाली धन दे नहीं ता यभा टीक कर दूगा—हा ।

और फिर दूर बिगावी धार उमूम होकर देवीगिह ने धावाज दी, ले धा वे जल्दी से धा इनको नी दिगा दीजो ।

राज नर बानगीन स्वगित रही । फिर एक चौथा कुछ रुगा पछा स्वर बीगा धबी देकगो ।

देवीगिह ने बज उरकट स्वर ने बहा दण्डावाला नियाला—धुरा ।



बीच में कुछ छोड़ छाड़ मत जाना हा । और उमन एक् चीरमार किया जसा मामन मधुर भोजन आने पर व भी लोग करत है ।

रुखा स्वर कुछ और हताई से बाना चार ता पस्मे दाग ।

देवीसिंह ने डपटकर कहा अवे चार क्या बे—अब तू घाट ल लेना पर देखेंगे हम पूरा । फिर कुछ रक्कर, देग बे तू भी क्या न है और हम भी क्या न हैं । तू जो लुभ प घाता है दिखाद और जो हमसे वनगा दे देंगे समझा ? और हमसे ज्यादा बाग्या भी क्या दे देंगे हैं ? क्यों बे ठीक कहा कि नहा ?

मैन तनिक भावकर न्या । रुखे स्वर के मासिक ने वधों पर से बहणी उतारकर दो पिटारिया जमीन पर टिका दी थी । उसकी दली लगे उससे एक और धूल भरे चेहरे से चिपक रही था । एकाग्र होकर वह पिटारिया झोलकर एक मनी गूदड़ी की ओर म तरह तरह की चीजें इधर उधर जमा रहा था

उस दिन मैंने कतना ही देखा था । या यह भी काफी असाधारण और स्मरणीय था ही । जमना उस वार मे और भी कुछ बात हुआ । लेकिन जान उसे कहना चाहिए जिससे नई दृष्टि मिल नही सा जानकारी का कोई घन्त घोड ही है । देवीसिंह व माना पिता नहा ये कम से कम उस व सम्पक म नहा थ किसी बाबा ने उस पाना था और फिर गहर क मर स्थल म डान लिया था कि जा सक तो कोई हरियाना ठाव डूब ले । किंतु देवीसिंह का जीवन म रचि थी—अपार रचि थी—वह हारा हुआ भिसारी नहा यन मका था

मुझे वरामने म वह अक्सर गीत जाता । लेकिन हर वार पसे नही मागता मुस्कराकर रह जाता । धीरे धीरे समझ म आया कि वह किसी एक व्यक्ति स मज्जाह म एक वार से अधिक नही मानता और समय मुस्कराकर मानो कह देता है कि हा मैं जानता हू आप मेहरबान हैं जब मुझे जरूरत होगी आपसे माग लूंगा

कुछ महीना बाद वह एकाएक लापता हो गया। उस वरामद से गुजरते हुए जब-तब उसकी अनुपस्थिति खटक जाती। पर जल्दी ही मैं उसका भी आदी हो गया। फिर कोई डेढ़ वर्ष बाद ही उमरानि मिस्टर अस्थाना के साथ जान अचानक उसे मगजीन बेचते हुए देखा। जब अचम्भा कुछ समझा तो मैंने जग फिर तिर से पढ़ सब देखा। अबकी बार घट तक नहा। पर तब हा क्याकि अब वह लडा था। उसकी दोनों टांगें तोह और लवड़ी के एक चौसट म कसरत मीची कर दी गई थी—अभी उनम जोर इतना नहा था कि वह बेवग उहावे सहारे लडा हा सबे पढ़ वह चन ता मयता था और अब उसवे चेहरे पर आत्मविश्वास और भी स्पष्ट था। पूछने पर मानस हुआ कि उसने पसे जुटाकर अपने इलाक का प्रबन्ध किया था। पोलियो रोग के एक विदेशी विरोधक का नाम छ महान बिताए थे और अब अपने भविष्य के बारे में आदरस्त था। अब जो हो वह भाग नहीं मागगा और मगजीनों के बित्री के सहारे पढ़ जिस भी लगा।

एक दिन मैंने पूछा दवीसिंह मगरी का तमासा अब नहीं देखते ?

उसो हमपर उत्तर दिया बाबूजी सब तो तमासा ही तमासा है।

इस अचान परिपक्वता से कुछ सहमकर मैंने पूछा क्या मतलब ?

वह बोला 'पहले मैं जमीन पर रेंगता था कुछ भी देखने के लिए मुझे गन्त उठाना पड़ती थी। तब हमारा एक तमासा का तलाश रहती थी जो बिना गन्त भकाए देख सकू। अब तो लडा-लडा सब देखता हू। सभी तमासा है। फिर कुछ कसरत जग गिरान भरोहमी से नित न कग-कग बाबू साहब आते हैं और क्या क्या मगजान मरोहमी हैं।

उमरानि मैंने सोचा था इस समय बर्नी मिस्टर अस्थाना साथ हाने। पर अचान ही हुआ गहा ये। गहा ता सारी बात मुनकर उह कबन पग मुद का और प्रमाण हा दीगता क्याकि गही ता बिगमिन की की कमी ही परा हो और पागियो हा क्यों हा ?

ऐस भी सोच हैं जा मानत हैं कि अभाव म भी अपने का उपयोगी बनाना पगु होकर भी समाज म अपने अस्तित्व को साधक बनाना केवल पलायन है । उनक लिए बगों का सघष ही सज कुछ है व्यक्ति का आत्म दान कुछ नहीं । व यह नहीं देखत कि आत्मदान स पलायन सबसे बडा पलायन है—वह जीवन के रस स पलायन है—जिस मरुभूमि की ओर कौन जाने !

## नारगिया

उस दिन 'नर मोहल'वालो ने दगा कि हरमू न मोहल के बाहर की नाम की पक्की पर वास्तव में धून भरी सड़क पर पुष्पान और चोरिये का टुकड़ा बिछाकर उसपर नारगिया मजावर दुकान बर ही है तो सबसे सब विस्मय में ताकने रह गए। हरमू और दुकान।

जब न हरमू और परमू दोनों आई भवानक बाहर मुहल्ल के मिने की पुरानी दीवार की एक महाराब के नीचे घर बनाकर जम गए थे तब से किसीने उतका काम करना हुआ या काम की सलाह भी करना हुआ कभी नहीं देता था। रिपयूजी द्वारे माहला की तरह इस मोहल में भी घनेरा घाए थे लेकिन सभी बहुत जल्द हम पाणिन में जुट गए थे कि ये 'गरणार्थी' न रहकर 'पुरपाथी' कहानन के अधिपति हो जाए। मभीन कुछ न कुछ जुगन कर ला थी या गुजर-बसर का कौन बर्तीरा निवास लिया था। लेकिन हरमू और परमू ज्या के क्यों बने हुए थे। किसीने उत कभी भी न मायन नहा देता। खारी करना भी कम न कम लगाता कभी नहा। यद्यपि यह सब समझने में कि लोना भाग घर में कुछ देकर नहीं आए हैं और कुछ कमान भी नहीं है तो खारी के बिना कम काम चलता होगा। हा खार जा के दीनन भी नहीं थे किमीन मामने उनकी घातें नीचा नहीं हानी थी और दोनों का यथार्थ कुछ ऐसा 'गानीनता' मरा हाता था कि किमीनो कुछ पूछने का माहल भी महा होता था।

'गानीनता' के स्तर में कुछ गिगन कभी दीनता था तो दोनों भाइयों के घापन के व्यवहार में। यह नहीं कि ये घापन में सटन भगदने थे—इतना ही कि परमू हमेशा हरमू को ताने देता रहता था या उस भी सम्भव हो चौरता रहता था। हरमू प्रायः दान भाव से सब कुछ सह सता था लेकिन

कभी कभी वह भी बिना अपना स्वर ऊँचा उठाए जला भुग उत्तर दे देता था। पछाहा लोगों में ऐसी बातों पर फौरन नूतनाक और मारपीट की नीयन आ जाती है और रिपयूजी तो और भी आमना से ज़िगपर तिसपर हाथ छाड़ बटत हैं इसलिए मोहल्लवान इन दोनों भाइयों में इम तनाव-भरे सहास्तित्व पर और भी घबर्मा किया करता था।

खर अब हरसू में नारगियों की दुकान लगाई है और परसू दुकान से कुछ दूर एक पुनिया पर बठा हुआ बड़ी घबर्जा से दुकान की ओर हरसू की ओर देख रहा है।

एक एक करके मोहल्लों के दो चार बच्चे नारगियों की दुकान के पास इकट्ठा हो गए हैं। नारगियों का आकर्षण तो है ही लेकिन उससे अधिक उस बात का कीतूहल कि दुकान हरसू की है।

एक छोटी लड़की दूसरा से कुछ आगे बढ़कर एक हाथ से अपने भबने का छोर उठाकर मुह में लामती हुई दूसरे हाथ से मानो अतर्कित भाव से नारगियों की ओर जगारा करती है और फिर हाथ ममटकर हकुर-हकुर हरसू की ओर देखने लगती है।

नेगी ? हरसू पूछता है।

लड़की कुछ उत्तर दे इससे पहले परसू थडबडाता है हा ? दे दुकान उठाकर दू उसको ? क्या ऐसे ही दुकान खलाएगा ?

हरसू भाई का बात को अनसुनी सा करता हुआ गडकी से कहता है नेगा तो जा घर से पस ले आ। चार चार पस की एक है।

तो ऐसे दुकान खलाएगा तू। छोटे बच्चों को फुसनाकर घर में पसे मगाकर मुताप करेगा। बच्चा को बिगाँते गम नहीं आता ?

भाइयाँ में भगना हो रहा है या तहा बच्चा की समझ में नहीं आता। क्योंकि ऐसे सम स्वर में और तटस्थ भाव में भगडा होने उहोंने कभी दखा नहा। लेकिन बातोंवरण में कहा पर तनाव है यह व समझत हैं। लड़की एक बार हरसू और एक बार परसू का ओर देखती है और रक्षासी सा हो जाता है।

हरगू एन धण बं निण उमवी ओर दयता है ओर फिर ७ नारगिया उठाकर लडकी को द देता है ।

अ रो मत, स जा । पस जय हगि तय द न्ना—नहा ता न रही ।

परगू असम्भवत भाव स आनाग की ओर दस रहा है मानो उसन यह देगा न हा, न उस इस सबस का मतलब हा । सबिन बहा सम स्वर कहता है हा-हा बाप का माल है द द । पन न्गुगा बहा ए ओर माल साणा ओर दुबान बसाणा । बडी फशाडी गिया बना है । सब साल रिपूजो जस घर के नवाय हाठ है ।

हरगू एन बार भाई का ओर दयता है ओर फिर घुप लगा रहता है । लडकी चला जाता है ।

ओरिया मोडकर फिर बिछा दिया गया है । नारगिया बपन स रग कर बमबा दी गई हैं । ऊपर नीम की पत्तिया की हमबा मरगगहट गुनो हुए हरगू साचता है उसका नि दगोब सहार जस-नग बट जाएगा ।

नारगिया ब आमपाग दा बार बच्च फिर झुठे हा गए हैं । नार गिया का बाव तो बिगुन है दुबान ब नयपनका कोतून भा अभीमिग नहा है ।

भीन गया बगुत हा बचा नारगिया लना हा ता घर जाकर पस ल भासा ।

परगू अपनी पुत्तिया पर स गुन रहा है । दयन की जरूरत उन महा है । यह माना आगि न्य बगुलो स सब कुछ दय तता है । बकि सब कुछ पहन स हो उमका दया दयाया है । ब्यम्य बा एक रंगा जयक हाग का तिरछा कर जाती है बग इतना हरगू दय लता है । परगू जानता है बि बट देग भगा—उमक द्वारा दया जान ब लिए ही ब बहा सब लार् गई है ।

बच्चा की टोनी म म दा एक आग हाकर बन जात है । पाछी देरबा एक सौटकर घाता है । लडकी खान हा बगा रही है कि उमकी मुठा म दनी है । उमके पाछे-पाछे र ओर बपनग बचे बन घाने है ओर ब

भी जानते हैं कि उनके भगुमा की मुट्ठी में पस है। पसो से उन्हें काई सरो नार नहीं है लेकिन भगुमा की मुट्ठी का पसा भागे जो काम कर सकता है उसमें उनकी निचस्पी जरूर है।

इकनी और नारगी का विनिमय हो जाता है। बच्चा विजय से भरा हृदय और नारगी से भरी मुट्ठी लिए हुए एक ओर को हटकर नारगी छीतकर खाने लगता है।

दुकान पर जो करिमा होनवाला था वह हो चुका और बड़ा अब दखन को कुछ नहीं है। दूसरे बच्चों की भाँखें हरसू की साबुत नारगियों से हटकर भगुमा के हाथ की छिनती हुई नारगी पर घटक जानी हैं। कस उस नारगी से पाक अलग होती है और धीरे धीरे उठकर भगुमा के मुँह में चली जाती है कभी इधर उधर नहीं जाती यह कितना बड़ा अचरज है।

परसू गरदन जरा एव और का मोड़कर कहता है अबे इन सबका भी कह न घर जाकर पस ने भाए। गाढ़कर रखे होग पसे इन्होंने सब साकर तुम्हें द देंगे।

हरसू तिनमिलाकर बच्चों से कुछ कहने को होता है लेकिन फिर रुक जाता है। एक बार बच्चों को मिर से पर तक देखता है और भाँखें झुका सेता है। बच्चे धधनगे हैं इसका ठीक अब अब उसके मन में बैठता है— इस मोहले में बच्चा का निचन आधे शरीर में तो मो भी कुछ पहनाने का रिवाज नहीं है इसलिए धधनग का मतलब यही हो सकता है कि ऊपर का आधा शरीर भी ढका नहीं है। हरसू भाँखें झुकाए गए से थूक का एक घूट निगलता है। थूक का स्वाद कुछ नहीं होना चाहिए पर हरसू के लिए वह घूट कितना कड़वा है यह उसके दबे हाँठों से दीख जाता है।

हरसू और परसू की खीचातानी की ओर बच्चा का ध्यान नहीं है। वे एकटक पाक पाक गायब होनेवाली नारगी के अचरज को ही देख रहे हैं।

परसू कानी आख से हरसू को देखता है मानो उस तीन रहा हो। फिर मुँह बच्चों की ओर फेर लेता है।

लड़के अपने साथिया को भी एक एक पाक द द। भगुमा की आर

उमूत होकर परसू का स्वर कुछ कम रुखा हो गया है माधियो के साथ बाहर खाना चाहिए।

अगुमा अगुमा है और इस वक्त नारगी का मासिक भी है। परसू की ओर देखकर उदत स्वर से कहता है क्या दे दू ? मैंने पता देकर नहीं शरीदी ?

परसू वहीं पुसिया पर सेटे-सेटे मुह दूमरी ओर करने झुकता है। अवे हरसू मुनी नवाबजाद की धाँनें। पसे दकर तरीदी है। पमा सेरे बापने कहा से शरीदा है भला ? लेकिन फिर परसू का स्वर कुछ धीमा होकर माना भीतर की मुट जाना है। लेकिन अच्छे को क्या डाटना। बाप मिलता तो पूछता कहा से मलक करव बमाया है पमा और क्यों सठवे को अभी न ऐसा बमोनापन मिगाया है। फिर कुछ रखकर बन्द हुए स्वर में अवे हरसू तू ही दे दू न राखको एक एक नरगी—देख बेचारे बसे मुह ताक रहे है। अच्छे को बेचती मिरसाना अच्छा नहा होता।

हरसू अचकचाकर भाई की ओर दपता है। यान निस्पदह उसीस कही गई है लेकिन उनमें एक ठेगा असमाव है कि उसका जवाब कोई भी द दे—या न भी दे—परसू को कोई एक नहीं पढगा। हरसू जरा साहम बन्दोरकर कहता है कहा न द दू सबको ? फिर तू ही कहता है कि दुबान कल खनेगी और व न ब। मान कहाँ स तरीदकर लाऊगा।

अवे धम यही है तरा रिपमूओ का ज़िगरा ? अवे जानता नहा हम सब लोग पीछे बड़ी-बड़ी जायगने छोडकर भाए हैं। और देखता नहीं कहा भी जिननों ने फिर जायगने गढा कर सो है ? तू ही बता पहली बार नरगी तरीने को पमा कहाँ स आया था—या कि नारगिया तरे साथ भाँ की लोग मे जनमी थी ?

हरसू चुप है। चुप में गी विरोध समा जाते हैं। बोलत कुछ बनता नहीं है।

अवे दे दे न तरगी—उहें एसे देखने देग मुझे तरस्त नहीं आता—परम गी आती ? तू इनसान का बन्दा है



तरस ता आता है परसू—पर पसा बन्ग स आएगा ?

चल पसे मै दता हू—गिता सबको नरगिया । परसू सेट स आधा बठा हावर अपनी पटी जय टटो नता है और एक घटनी निकालकर हरसू की ओर फेंकता है ।

हरसू चुपचाप छ नारगिया उठाकर एक एन कर बच्चा का बाट देता है । बाँच भिभवत हुए हाथ बढ़ाकर न नेते हैं । छण भर अजुनी भरे भर अचनचाए-म कभी हरसू की ओर और कभी नारगी की ओर दसत हैं और फिर धीरे धीरे खान नगत हैं । हरसू टाट क नीचे स टटो नकर एक दुधनी निकालता है और परसू की ओर बगता है यह न अपनी बाकी ।

क्या ? परसू आनबी सा कहता है । मेरी बाकी ? बाकी कसा ?

तून अटनी दी थी दा आन बाकी तेरे बच्चे कि नही ?

मेरे दा आन ! हुह ! मेरे दा आन ! भरे बाप के हैं ! जा ये भी उस छावरे का द द जा अपने पस स नरगी सरीदता है वह द उसे जाकर मह भी अपने बाप का द द ।

हरसू दबे स्वर स कहता है उसने क्या बिगाटा है वह ता बच्चा है बाप जसा हा

हा बे ठीक कहता है तू । अच्छा तो रज सिगरेट पानी कर लेना । या नही आग भी ता ऐसे बच्चे आएंग—उहें दे देना । नही तो दुकान तेरी कस चनगी ? नोग भी क्या कहेंगे—कि रिफ्यूजी बच्चा दुकान करन लगा ता निल आत्मा भी बेचकर खा गया ।

हरसू बीना तो तेरे दा आना से सगावन चल जाएगा ? और दो नरगिया खिना दूगा फिर

अरे तो हम भर तो नही गए हैं । साल रिफ्यूजी बनकर आया है ता हीमला रखना सीरा । दिन बगने से कोई नही मरता उसके सिफुठने स ही मरत हैं सब—अक्टर साने चाहे तो बख्शान करते रहे ।

हरसू दुकान करता है आज उसने सात नारगिया बेची हैं और मान के सात आने क अनावा दो आने घेनुए म पाए हैं । उसकी आँखें